आर्योदय

ARYODAYE

Read Aryodaye on line -- www.aryasabhamauritius.mu

Aryodaye No. 321 | ARYA SABHA MAURITIUS | *20th Nov. to 30th Nov. 2015*

LET US LOOK AT EVERYONE WITH A FRIENDLY EYE

- VEDA

ईश्वर क्या है? केवल प्रभापूर्ण प्रकाश

ओ३म् उद्वयन्तमसस्परि स्वः पश्यन्तऽउत्तरम् ।
देवं देवत्रा सूर्यमगन्म ज्योतिरुत्तमम् ।।

यजुर्वेद २०/२१, २७/१०,३५/१४, ३७/२४
अथर्ववेद ७/५४/७, ऋग्वेद १/५०/१०

QU'EST-CE QUE C'EST QUE DIEU ?

UNE LUMIERE SPIRITUELLE TRANSCENDANTE ET RESPLENDISSANTE

Om ! Udvayam tamassaspari svaha pashyanta uttaram.
Devamdevatrā suryamaganma jyotiruttamam.

Yajur Véda 20/21, 27/10, 35/14, 37/24,
Atharva Véda 7/54/7, Rig Véda 1/50/10

Glossaire / Shabdārtha

Vayam – nous ; **Tamassaspari** – resplendissant, hors des ténèbres de l'ignorance et de l'obscurité; **Svaha** – merveilleux, incarnation du bonheur ; **Twam** – En vous regardant, en vous apercevant; **Pashyantaha** – prendre connaissance ou atteindre Dieu par la méditation / la communion avec Dieu; **Uttaram** – Le libérateur du monde de toute souffrance, le sauveur de l'humanité, le plus subtil ou ingénieux, tout pénétrant, celui qui survit la fin du monde voire celui qui est impérissable, immuable et éternel; **Devam** - C'est Dieu – tout puissant et resplendissant, qui nous accorde le bonheur suprême/la béatitude (Moksha); **Devatrā** - Parmi les sages, les ascètes, les érudits, les savants; **Devam devatrā** - C'est Dieu, Omniscient et Maître-Suprême de l'univers, qui pourvoit la lumière à tous les corps célestes de l'univers tels que le soleil, la lune, les étoiles, les planètes entre autres et les illumine; **Suryam** – brillant, resplendissant comme le soleil, l'âme de l'univers; **Jyotiha** – la lumière divine, suprême; **Uttamam** – excellent, pur et sacré; **Pari** – de tous cōtés; **Ut** – excellent, très bien, tout à fait; **Aganma** – savoir réaliser Dieu entrer en communion avec Dieu; **Udganma** – Avec beaucoup de ferveur et de piété vous pouvez atteindre la grâce du Seigneur, voire, le bonheur éternel / la béatitude (Moksha)

Avant-propos

Plusieurs philosophes et savants du monde, de toute éternité, ont écrit des milliers de livres sur "la définition de Dieu." Toutes les personnes, qui recherchent la vérité, posent souvent cette question très pertinente avec beaucoup de passion et d'enthousiasme : "Qu'est-ce que c'est que Dieu ?" ***cont. on pg 3***

N. Ghoorah

प्रकाश के दो रूप : भौतिक और आध्यात्मिक

डॉ० उदय नारायण गंगू, ओ.एस.के, आर्य रत्न - प्रधान आर्य सभा

वेद की एक सूक्ति है – **आरोह तमसो ज्योतिः**- अर्थात् अंधकार छोड़, प्रकाश की ओर बढ़। अंधकार एक भयानक गुफ़ा है, जिसमें रहना खतरे से खाली नहीं। हम सभी अंधकार से दूर, प्रकाश में रहना चाहते हैं। अंधकार में ठोकर लगती है। रास्ता दिखाई नहीं देता। अन्धेरे में डर बना रहता है। यही कारण है कि सभी को प्रकाश प्यारा होता है –

अंधकार का कोई अस्तित्व नहीं है। प्रकाश के अभाव को अंधकार कहते हैं। जब प्रकाश आ जाता है तब अंधकार अपने आप नष्ट हो जाता है। यह अंधकार दो प्रकार का है – एक बाहर का और दूसरा भीतर का। सूरज के निकलने से बाहर का अंधकार दूर हो जाता है। आँखों में प्रकाश आ जाता है और सब कुछ दिखाई देने लगता है ।

हमारे अन्दर का प्रकाश है हमारे मन का, हमारी बुद्धि का प्रकाश। मन और बुद्धि में जब अंधकार भरा रहता है तब आदमी का जीवन बड़ा दुखी होता है। प्रकाश न होने से मन और बुद्धि में मलीनता आ जाती है, दोनों अपवित्र हो जाते हैं।

साबुन-पानी से नहा-धोकर हम अपने शरीर की सफ़ाई कर लेते हैं, परन्तु मन-बुद्धि और आत्मा को कैसे निर्मल करें, कैसे शुद्ध करें। महाराज मनु ने इसका उपाय बताया है – **'मनः सत्येन शुद्धयति'** – मन सत्य से शुद्ध होता है। यदि मन को प्रकाशित करना हो तो उसे शुद्ध बनाना होगा। जब मन में सच्चाई होती है, तभी वह शुद्ध बनता है। मन की शुद्धता मन की ज्योति है। सत्य से मन का अंधकार नष्ट हो जाता है। बुद्धि की पवित्रता होती है ज्ञान से। महर्षि मनु ने कहा - **बुद्धिर्ज्ञानेन शुद्धयति**।

हमारी बुद्धि का प्रकाश है – हमारा ज्ञान। ज्ञान से बढ़कर और कोई भी प्रकाश नहीं। ज्ञान का प्रकाश फैलाना धर्म है। झूठ बोलकर असत्य का प्रचार करके अंधविश्वास और अज्ञान फैलाना, संसार को अंधकार में रखना, आदमी को अज्ञानी बनाना महापाप है। बहुत से लोग अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए दूसरों को अंधकार में रखते हैं।

संसार में जो भी आविष्कार किये गये हैं, सब ज्ञान के बल पर ही हुए हैं। पृथ्वी, अग्नि, जल, वायु, आकाश - प्रकृति के पाँच तत्व हैं। वैज्ञानिकों ने इन पाँचों तत्वों का ज्ञान प्राप्त करके तरह-तरह के आविष्कार किए और मानव जाति का बड़ा उपकार किया। भौतिक ज्ञान को अंग्रेज़ी में - Material Knowledge कहते हैं। रोटी, कपड़ा और मकान इसी भौतिक ज्ञान से हम प्राप्त करते हैं। अन्दर का प्रकाश है – आध्यात्मिक ज्ञान यानी - Spiritual Knowledge। इस प्रकाश को प्राप्त करने से आत्मा-परमात्मा का ज्ञान होता है । आत्मा क्या है? इस शरीर को कौन चलाता है। इस संसार को किसने बनाया? परमात्मा का स्वरूप क्या है? क्या कारण है कि कोई जीवन में सुखी रहता है और कोई दुखी। इस आध्यात्मिक ज्ञान को ऋषि मुनियों ने प्राप्त किया और बताया कि यह ज्ञान सबको प्राप्त करना चाहिए। यह आध्यात्मिक ज्ञान किसी जाति विशेष के लिए नहीं है।

आज स्कूल-कालिजों में केवल भौतिक ज्ञान दिया जाता है। इस ज्ञान के माध्यम से हम धन तो कमा सकते हैं, परंतु आध्यात्मिक ज्ञान के अभाव के कारण हम आत्मा-परमात्मा का सच्चा स्वरूप जान नहीं सकते। इसलिए आवश्यकता है कि हम भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार के प्रकाश का प्राप्त करें।

धन्यवाद ।

सम्पादकीय

अमृतमय जल

जल हमारे जीवन का आधार है। यह एक ऐसा परम तत्व है, जिसका सेवन से हमारे शरीर में रस और रक्त बनते हैं तथा सारे बदन में ऊर्जा-शक्ति उत्पन्न होती है। जल के बिना जीवित रहना असम्भव है। जल नहीं तो जीवन नहीं। वेद में तो जल के महत्व पर अनेक बार वर्णन किया गया है।

जल को देवता माना जाता है, क्योंकि यह पदार्थ हमें प्राण दान करता है। हमारे पूरे शरीर को सुन्दर, बलिष्ठ और स्वस्थ बनाने में अति सहायक होता है, हमें स्वच्छ करके पवित्र बनाता है। जल की उपयोगिताओं से हमारे वस्त्र, घरेलू पदार्थ और कूड़े-कचड़े आदि साफ़ करके हम पवित्रता लाते हैं । जल हमारे लिए एक ईश्वरीय देन है ।

सूर्य के तापमान से पृथ्वी से जल भाप बनकर आकाश में उड़ जाता है और अमृत बनकर पुनः ज़मीन पर बरसता है। जिससे सर्वत्र हरियाली छा जाती है। वन, उपवन और वनस्पतियाँ बारिश के प्रभाव से हरा-भरा हो जाते हैं। अनेक प्रकार के फलों और अनाजों से पेड़-पौधे सुशोभित हो जाते हैं। जिन खाद्य पदार्थों का सेवन करने से सभी जीव-जन्तुओं को जीवन मिलता है। वायु और अग्नि की तरह जल हमारा महा रक्षक माना जाता है।

आज ऋतु परिवर्तन के कारण विश्व के अनेक देशों में अनावृष्टि के प्रभाव से वहाँ के जीव-जन्तु पीड़ित हैं। खाद्य पदार्थों तथा वनस्पतियों को क्षति पहुँचने से चारों तरफ़ महामारी फैली हुई है। लाखों जीवधारी जल के अभाव से बेमौत मारे जा रहे हैं। ईश्वर उनका कल्याण करें ।

अनावृष्टि के प्रभाव से विश्व के कई समृद्धशाली राष्ट्र भी अति चिंतित हैं । जल के बिना उनकी सारी सम्पत्ति बेकार साबित हो रही है। उस आपातकालीन स्थिति में वहाँ की जनता बेहाल है। वे पीड़ित अवस्था में यही आस लगा बैठी है कि कब वर्षा हो? परमात्मा की ऐसी कृपा हो कि शीघ्र ही उन देशों में भारी बरसात हो, जिससे उन्हें राहत मिले ।

यह हमारा बड़ा ही सौभाग्य है कि हमारे इस रमणीय देश में समयानुकूल बारिश होती रहती है जिसकी देन से हमारा देश हरा-भरा रहता है और इसकी रमणीयता स्थापित रहती है। हम अगर एक पौधा या पेड़ काट कर पाँच पौधे रोपने की आदत डालेंगे तो हरी-भरी वनस्पतियों के प्रभाव से यहाँ नित्य वर्षा होती रहेगी। जल की सुरक्षा पर ध्यान देना हमारा परम उद्देश्य है।

जल का दुरुपयोग करना अनुचित है। जो नासमझ व्यक्ति जल का महत्व समझे बिना निरन्तर उसका अनुचित उपयोग करता रहता है, वह अपने और पराये का जीवन दुखी बनाने का कुकर्म करता है। अतः हर एक बूँद पानी का दुरुपयोग करने से पहले यह सोच लेना चाहिए कि यह पदार्थ हमारा जीवनामृत है।

गंगास्नान पर्व के पावन अवसर पर हम सभी आर्य परिवार बड़ी ही पवित्रता पूर्वक नदी किनारे, तालाब या समुद्रीय तटों पर यज्ञादि कार्यों का भव्य आयोजन करके ईश्वर से प्रार्थना करें कि हमारे देश में सदा वर्षा होती रहे, ताकि कभी भी हमारे जीवन में जल का अभाव न हो। हमारे सभी आर्य परिवार गंगास्नान के अवसर पर यह संकल्प लें कि वे भूलकर भी जल का दुरुपयोग न करें, क्योंकि जल हमारे लिए अमृत है। गंगास्नान सभी हिन्दू भाई-बहनों के लिए मंगलमय हो ।

बालचन्द तानाकूर

सामाजिक गतिविधियाँ

दीवाली एवं ऋषि-निर्वाण २०१५

सत्यदेव प्रीतम, सी.एस.के., आर्य रत्न

पिछले लगभग पचास वर्षों से आर्य सभा मॉरीशस दीवाली के महान् अवसर पर ऋषि-निर्वाण मनाती आ रही है। इस साल पिछले रविवार ता० ८ नवम्बर २०१५ को सायंकाल ३.४५ से ६.०० बजे तक मनाई जिसका सीधा प्रसारण एम.बी.सी.,टी.वी. की चनैल तीन से हुआ। घर बैठे हमारे दर्शकों को शुरू से अन्त तक कार्यक्रम देखने का मौक़ा मिला।

मौक़े पर हमारी मुख्य अतिथि राष्ट्रीय सभा की अध्यक्षा (स्पीकर) श्रीमती माया हनुमान जी थीं। पोर्ट लुई के चुनाव क्षेत्र नं० २ की माननीया श्रीमती रूबिना जद्दू जोनबकस पी.पी.एस. ने भी अपनी उपस्थिति से समारोह की शोभा बढ़ाई ।

इस वर्ष के उत्सव की जिम्मेदारी पोर्ट लुई आर्य ज़िला परिषद को सौंपी गई थी। सभी उपस्थिति लोगों को भोजन से सत्कार उन्हीं लोगों ने किया।

खुशी की बात रही कि आर्य सभा के सभी अन्तरंग सदस्यों ने भाग लिया। अलावा इनके मोरिशस भर के हमारे प्रतिनिधि शाखा-समाज का प्रतिनिधित्व कर रहे थे।

कार्य का आरम्भ हवन-यज्ञ और समापन भजन-कीर्तन एवं शान्तिपाठ से हुआ।

दीपावली २०१५ का सम्मान

आर्य सभा की ओर से हर साल हम तीन महानुभावों को सम्मानित करते हैं। इस साल भी हमने गत रविवार दि० ८.११.१५ को दीपावली महोत्सव और ऋषि-निर्वाण मनाते हुए पं० जयचन्द ओखोजी, डा० जयचन्द लालबिहारी और श्रीमती विद्यावती कासिया को उनकी लम्बी निस्वार्थ भाव से सामाजिक सेवा के लिए 'आर्य भूषण' के उच्च सम्मान से विभूषित किया।

इस साल हमने 'लेखन विशारद सम्मान' प्रदान किया हमारे दो लेखकों को डा० इन्द्रदेव भोला इन्द्रनाथ और श्री नरेन्द्र घूरा। दोनों हमारे मुखपत्र आर्योदय के स्थाई सहयोगी लेखक हैं। दोनों सम्पादक मंडल के सदस्य भी हैं। इन्द्रनाथ जी विभिन्न पुस्तकों के लेखक के साथ आर्योदय के लिए अँग्रेज़ी, फ्रेञ्च, हिन्दी में लिखते हैं तो नरेन्द्र जी वेद मंत्रों को बहुत ही सरल. सरस और सहज हिन्दी का जामा पहनाते हैं। पिछले दिनों नरेन्द्र ने दिवंगत आर्य नेता श्री मोहनलाल मोहित की जीवनी लिखी है।

हम आर्योदय की ओर से सभी को शुभ कामनाएँ पेश करते हैं कि वे भगवान् की कृपा के भाजन बनें ।

ज़िला स्तरीय सम्मान

पिछले कई वर्षों से आर्य सभा मोरिशस अपने चन्द कर्मठ सेवकों को ज़िले स्तर पर भी सम्मान प्रदान करती आ रही है। इस वर्ष दीपावली एवं ऋषि-निर्वाण के महान् अवसर पर ज़िला पीछे एक-एक महानुभाव को विभूषित किया। जो इस प्रकार थे – पोर्ट लुई की श्रीमती ज्ञानती पदारथ, मोका के श्री विजय कुमार रामधनी, ब्लॉक रिवर के पं० जयप्रकाश मूत्रा, सावान के श्री तुलसी तोन्दारी, फ्लाक के पं० ज्ञानदत्त तुल्वा, पाम्प्लेमूस के राजेश्वर लालबिहारी, रिव्येर जू राम्पार के बालचन्द देवदानी, प्लेन विलियेम्स के श्री धनराज दामरी और ग्राँ पोर के पं० महादेव सुनकसिंग।

हम सभी सम्मानित भाई-बहनों को हार्दिक शुभकामनाएँ पेश करते हुए भगवान से प्रार्थना करते हैं कि इनको सेवा के सन्मार्ग में अग्रसर करें और परहित का पीयूष पान करावें ।

रामसुभग गोबरधन जी चल बसे

एस. प्रीतम

रामसुभग गोबरधन जी ७.९.१५ को चल बसे। यदि और दो महीने जीवित रह जाते तो १०१ साल के हो जाते क्योंकि उनका जन्म ९ नवम्बर सन् १९१४ में हुआ था। उनके जन्म के वर्ष में महा विश्व युद्ध शुरू हुआ था। जिसको प्रथम विश्व युद्ध के नाम से जानते हैं ।

जब ५ साल बाद युद्ध खतम हुआ तो वे ग्राण्ड रिवर साउथ ईस्ट (दक्षिण महा नदी पूर्व) गाँव की प्राथमिक-स्कूल में दाखिल हुए थे। वहीं की पाठशाला में छठी परीक्षा में उत्तीर्ण होने के बाद गरीबी अवस्था के कारण आगे पढ़ न सके पर अध्यापक बनने के लिए IVth Class की परीक्षा में उत्तीर्ण हुए और वोलोन्टिर अध्यापक बन गए। आर्य परोपकारिणी पाठशाला में काम करने के काफ़ी समय बाद १९३६ में आर्यन वैदिक स्कुल वाक्वा में उपमुख्य अध्यापक के पद पर काम करने आये। उसी पाठशाला से १९७४ में अवकाश लिया। तब तक मैं वाक्वा आ गया था और मेरी उनसे मुलाक़ात हुई और तब से मृत्यु पर्यंत हमारा मधुर सम्बन्ध बना रहा। पर दुख से लिखना पड़ता है कि उनकी जन्मशती मनाई जा रही थी तो मैं भारत में एक सम्मेलन में भाग लेने गया हुआ था और मृत्यु का समाचार तब मिला जब हवाई जहाज द्वारा भारत जाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के अन्दर प्रवेश कर चुका था। इसके लिए मुझे बेहद दुख हुआ; जन्म भर पछताना पड़ेगा।

गोबरधन जी 'मास्टर गोबरधन' के नाम से जाना जाता था। वे एक अच्छे आर्य समाज सेवी थे। प्लेन विलियेम्स आर्य ज़िला परिषद में उसके साथ काम करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। मैंने उनसे बहुत कुछ सीखा।

उन्होंने खुद पाँच पुस्तकें रचीं जिनमें विविध विषय निहत हैं, पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं – १. अमृत, २. चुने हुए मोती, ३. आप के लिए, ४. अन्मोल रत्न, ५. जो मैंने गाया।

ऊपर लिखित सभी पुस्तकें मुफ़्त में बाँटी गई थीं। पढ़ना, लिखना और गीत तथा भजन गाना उनकी हॉबी थी।

मास्टर गोबरधन अपने समय के मशहूर गवैया थे। रात्रि के भोजन के बाद 'गमट' शुरू होता था और अगले दिन सूर्योदय तक चलता था। श्रोतागण प्रातःकाल तक टस से मस नहीं होते थे। प्रश्नोत्तर शैली में भजन गाये जाते थे।

उनके साथ रहकर मैं इतना प्रभावित और प्रेरित हुआ कि उनके जीवन पर एक पुस्तक ही लिख डाली जिसका शीर्षक है – *'रामसुभग गोबरधन – एक प्रेरक जीवनी'* ।

ढोल की पोल का प्रति उत्तर

कुछ दिन पहले किसी अखबार में आर्य सभा की विद्या समिति की पुस्तकों पर आलोचना की गई थी। उस लेख के आलोक में कुछ विचार व्यक्त हैं। आलोचना और समालोचना मुझे सहर्ष स्वीकार है। मनोविज्ञान के आधार पर सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली प्रक्रिया है। कोई भी अपने आपको सर्वेसर्वा नहीं कह सकता है। हमेशा सुधार की गुंजाइश रहती है। परन्तु असत्य बातें बिल्कुल स्वीकार नहीं।

आलोचक का कहना है कि इन पुस्तकों में सुन्दर चित्रों के अलावा कुछ नहीं है। चलो एक सकारात्मक विचार है कि चित्र सुन्दर हैं। अब देखें उनका कहना है कि चित्रों के अलावा उसमें कुछ नहीं । शायद इस लेखक ने पाठों के नीचे वेद मन्त्रों और उनकी व्याख्या को नहीं पढ़ पाया। उनका दुर्भाग्य है कि उन्हें शायद संस्कृत का ज्ञान नहीं है। अन्यथा वे कभी मंत्रों की अवहेलना नहीं करते।

यदि ऐसा है तो मेरी माँग है कि लेखक संस्कृत का अध्ययन अवश्य करें जैसे मैं एम.जी.आय में छः साल से कर रहा हूँ। संस्कृत ज्ञान के बिना कोई ज्ञानी नहीं हो सकता। यह एक चर्चा का विषय है जो मौका मिले तो बाद में करेंगे। दूसरी बात जो यह कहा गया कि आज बैठकाओं की स्थिति दयनीय है।

इसके दो मुख्य कारण हैं ।

१. पूर्व में सरकारी पाठशालाओं में हिन्दी की पढ़ाई नहीं होती थी। आज बैठकाओं के बच्चे ही वहाँ जा रहे हैं।

२. Private Tuition

अन्त में मेरा एक सुझाव है, यदि आप की पाठ्य पुस्तक से बच्चों को लगे कि हिन्दी एक कठिन भाषा है तो समझ लेना कि ये बच्चे हिन्दी पढ़ना ही बन्द कर देंगे। इसीलिए पाठ्य पुस्तक लिखते समय अपनी विद्वत्ता का प्रदर्शन मत कीजिए, बल्कि बच्चों को ध्यान में रखकर पाठ्य पुस्तक तैयार करें। अपने ४५ के अनुभव से कह रहा हूँ ।

प्रभाकर जीऊत
प्रधान, विद्या समिति

उन्नति तेरा अधिकार है

अनुहूतः पुनरेहि विद्वानुदयनं पथः
आरोहणमाक्रमणं जीवतो जीवतोऽयनम् ।।

अथ० ५/३०/७

अनुहूतः - प्रोत्साहित किया हुआ (तू), **पुनः + एहि** - फिर इस पथ पर आरोहण करो, **विद्वान्** - जानता हुआ, **उत् + अयनम्** - चढ़ाव को, **आरोहणम्** - उन्नति करना, **आक्रमणम्** - आगे बढ़ना, **जीवत + जीवतः** - प्रत्येक जीव का, प्रत्येक मनुष्य का, **अयनम्** - मार्ग है, उद्देश्य है, लक्ष्य है

शब्दार्थ – प्रस्तुत मन्त्र में हारे-थके और निरुत्साही व्यक्ति के लिए दिव्य सन्देश है-

हे मानव ! यदि तू प्रयत्न करके थक गया है तो क्या हुआ ! तू हतोत्साह मत हो । तेरे अन्दर जो उत्साह के श्रोत है, शक्ति का केन्द्र है, भावनाओं का सागर है उनको मन्द, बन्ध और खण्ड नहीं करना है। आशा को अपने जीवन में पुनः लाकर फिर इस मार्ग पर आरोहण कर । मनुष्य का अर्थ है मत्वा कर्माणि सीख्यते अर्थात् मनन पूर्वक कार्य को सिद्ध करना।

मन, बुद्धि और विचार से किया हुआ कार्य हमेशा सार्थक एवं सबल होता है। विवाह संस्कार में शिलारोहण की विद्धि भी इसी मार्ग पर चलने का आह्वान करता है। मनुष्य का लक्ष्य उन्नति के लिए है अवनति के लिए नहीं, अर्थात् उनका लक्ष्य आगे बढ़ने के लिए है और जीवन में स्वाध्याय, स्व-निर्माण और स्वाभिमान की आवश्यकता है। उन्नति का साधन ही पवित्र भावना है, इन पवित्र साकार भावनाओं के द्वारा ही मनुष्य आगे बढ़ सकता है। मन में विपरीत भावनाओं का उत्पन्न होना भी अवनति का कारण हो सकता है अतः मन को ध्यान साधना द्वारा पवित्र करना है जिसकी रीति-नीति अति न्यारी सन्ध्या के मनसा परिक्रमा में दर्शाया गया है।

मार्ग में अनेक बाधाएँ प्रस्तुत हो जाती हैं, परन्तु उनसे घबराना नहीं है। आने की चढ़ाई को देखकर डरना नहीं चाहिए अपितु हमेशा याद रखना कि तेरे लिए आगे बढ़ने का मार्ग ही नीयत है – पीछे मत भागो। आशा और उत्साह से तुझे आगे ही बढ़ना है। आगे बढ़ना, उन्नति करना ही जीवन-मार्ग है। पीछे हटना, अवनति करना मृत्यु-मार्ग है। पथ कठिन है तो क्या हुआ ! परीक्षा तो कठिनाई में ही होती है।

निराश और हताश होने की आवश्यकता नहीं है। आगे बढ़ना, उन्नति करना जीव का अधिकार है। अग्नि बनना है – नेता, राजा, पिता-माता सभी को अग्नि बनना है।

समाज में दुर्गुण, दुर्व्यसन और बुराइयों को देखकर अक्सर हम निराश हो जाते हैं। और अनेक निर्बुद्धि व्यक्ति पथ भ्रष्ट एवं अवनति के पथ के अनुगामी हो जाते हैं। इस प्रकार के व्यक्तियों को जागना है, संकल्पी बनना है मनुष्य को सब कुछ सहना नहीं है अतः सम्भल कर दूसरों की सहायता करना है।

आर्यसमाज का कार्य यही हैं कि दूसरों को बचाना है और स्वयं को इतना बलिष्ठ एवं सशक्त बनाना है और यह तभी सम्भव है जब हम पुनः आर्य समाज के सिद्धान्तों एवं मान्यताओं को अपने जीवन में लाने की चेष्टा करे –

अतः उन्नति तेरा अधिकार है ।
जीवन तेरा है, उसको सुन्दर
बनाना तेरा अधिकार है ।
आगे बढ़ो तुझे अच्छा बनना है ।
अच्छा बन, सच्चा बन,
उन्नति तेरा अधिकार है ।

अलमिति विस्तारेण
आचार्य विरजानन्द उमा
प्रधान पुरोहित मण्डल

OM

ARYA SABHA MAURITIUS

Bahukundiya Yajna & Cultural Programme on the occasion of Ganga Asnan Festival

25 NOVEMBER 2015 -- 9.00 TO NOON

(1) Pte. aux Piments
(2) Blue Bay
(3) Le Bouchon
(4) Belle Mare (Near Ganeshwaree Mandir)
(5) La Cambuse
(6) Bois des Amourettes (Near Jetty)
(7) Petit Sable
(8) Old Grand Port
(9) Telfair Garden, Souillac
(10) Flic-en-Flac
(11) Anse la Raie
(12) Pte. aux Roches, Riv. des Galets (Nr. Parking)

परमपिता परमात्मा का आदेश : मनुर्भव

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री,
वेद प्रवक्ता, सम्पादक-अध्यात्म पथ
संपर्क - फ़्लैट नं० सी.१ पूर्ति अपार्टमेंट (एक-ब्लॉक) विकासपुरी नई दिल्ली - १८

भारत मानवता की जन्मभूमि है। नर का तन मिलना हमारे कर्मों के फल के अनुसार ईश्वरीय विधान है परन्तु विशेष विचारणीय यह है कि नर तन की सार्थकता, उसकी पूर्णता तभी है जब उसमें नर मन की भी प्रतिष्ठा हो।

मनुष्य मननशील है। वह कर्मों को बुद्धिपूर्वक विचारकर करता है। यहाँ प्रसंगवश यह भी उल्लेख करना चाहेंगे कि हम त्याग का, वैराग्य का, संयम का, उपदेश देने वालों के इस मत से सहमत नहीं हैं कि वह मन को मारे, क्योंकि मन है तो मनन होगा, मन की उपमा हम मन के भण्डार से दे सकते हैं जहाँ हम आवश्यकता का सामान एकत्र करते हैं, मन में हम दूसरों से जो प्रेम, संवेदना, सहानुभूति और मैत्री प्राप्त करते हैं, ये सभी सुरक्षित रहते हैं। जिस प्रकार घर की व्यवस्था को सुचारु रूप से चलाने वाली एक गृहिणी भण्डार गृह में क्या हो, क्या नहीं हो, इसका निर्णय अपने विवेक से करती है, उसी प्रकार बुद्धि मन को नियंत्रण में रखे, यह बात तो समझ में आ सकती है। जो कुछ भी मधुर, प्रिय हो, उपयोगी हो वह मन में अवश्य रखा जाए। जो हमारे काम का नहीं, जिसमें कटुता हो, वह हम दूर फेंक दें। **तन्मे मनः शिवसंकल्पमस्तु** आदि मन्त्रों का सार तभी समझ सकते हैं जब हम अप्रिय, घृणा, द्वेष आदि दुर्गुणों को मन से निकालें और हितचिंतन को प्रश्रय दें ।

वेद ने मनुष्य की यही इतिकर्त्तव्यता नहीं मानी है कि वह केवल मनुष्य को ही हितचिंतन की परिधि में ले, हमें तो समभाव और दयाभाव अन्य प्राणियों में भी बाँटना है, यह हमें देवत्व की कोटि में लाता है। यही नहीं हम जितनी अवधि संसार में व्यतीत करते हैं, बौद्धिक, मानसिक, सामाजिक जो भी हमारा उपार्जन है उसका श्रेय मात्र हमारा ही नहीं है इसके लिए हम अन्यों के भी ऋणी हैं। इस ऋण से उऋण होने का मार्ग यही है कि हम इस क्रम में व्यतिक्रम न आने दें और इसके लिए हम ज्योतिर्मय पथों की रक्षा करने वाली जागरण प्रहरी बन सकें ऐसी उत्तम संतान भी संसार को देकर जाएँ।

गमों की आँख से आँसू निकाल कर देखो,
बनेंगे रंग किसी पर डालकर देखो।
तुम्हारे हृदय की चुभन कम होगी ज़रूर,
किसी का पैर का काँटा निकालकर देखो ।।

यदि अग्नि में अग्नित्व एवं वायु में गतित्व तथा जल में जलत्व न हो तो क्या आप उसे अग्नि, जल, वायु कहेंगे। उत्तर मिलेगा नहीं। ठीक इसी तरह मानव में मानवता न हो तो वह मनुष्य नहीं कहलाएगा।

वैदिक संस्कृति विश्ववारा संस्कृति है। इसका उद्देश्य है मानव का निर्माण दिव्य उद्बोधन है। परमपिता परमात्मा का आदेश है **'मनुर्भव'**।

ओ३म् तन्तुं तन्वन रजसो, भानुमन्विहि,
ज्योतिष्मतः पथो रक्ष धिया कृतान ।
अनुल्वणं वयत जोगुवामपो मनुर्भव, जनया दैव्यं जनम ।।

दिव्य कर्म को करते हुए आलोक का अनुगमन करो ।
विज्ञानप्रद आलोक के शुभ मार्ग की रक्षा करो।
उलझन रहित कर्तव्य के तुम विश्व विस्तारक बनो।
मानव बनो, मानव बनो, तुम दिव्यतम मानव बनो।

आज विश्व में कोई ईसाई बनाने पर शक्ति लगाता है, कोई बौद्ध बनाने में, कोई मुसलमान बनाने में तत्पर है। वेद कहता है मनुर्भव, मनुष्य बन। ईसाई बनने पर व्यक्ति केवल ईसाइयों को ही ममत्व से देखेगा। मुसलमान बनने पर वह केवल मुस्लिम व्यक्ति से ही प्यार करेगा किन्तु मनुष्य बनने पर तो सारा संसार उसका परिवार होगा।

एक बाप के बेटे हैं सारे, एक हमारी माता।
दाना पानी देने वाला, एक हमारा दाता ।
फिर किस मूर्ख न लड़ना तुम्हें सिखाया।
सबसे करलो प्रेम जगत में कोई नहीं पराया।

जातिवाद एवं संप्रदायवाद के दलदल से हटकर हम मानवतावाद को जीवन में लाएँ।

अग्नि हमें उन्नति की राह दिखाती है। वह हमारी परीक्षा लेती है। उसके ताप से भोजन पकाकर हम स्वयं तो खा लेते हैं लेकिन वह यह भी जानना चाहती है कि वैसा ही भोजन दूसरों को प्राप्त कराने की कितनी व्यग्रता हमारे हृदय में है?

वेदोद्धारक देव दयानन्द महाराज मनुष्य की परिभाषा बताते हुए कहते हैं मनुष्य उसको कहना जो मननशील हो, अन्यों के सुख-दुख और हानि-लाभ को समझे। पापी, दुष्ट, अन्यायी, अत्याचारी चाहे कितना सशक्त हो, उससे कभी न डरे, उसका प्रतिवाद, अप्रियाचरण सदा करे और धर्मात्मा चाहे निर्बल हो, निर्धन हो उसका सत्कार, प्रियाचरण सदा करे। जहाँ तक हो सके अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा करे। इस काम में चाहे उसको कितना दुख प्राप्त हो, चाहे प्राण भी चले जाएँ, परन्तु इस मनुष्यता रूप धर्म से पृथक कभी न होए।

आगे बढ़ने से पूर्व हम पूछना चाहेंगे दुनिया के लोगों से इससे पूर्णतर मनुष्य की कोई परिभाषा कहीं देखी है क्या? पर किसे चिन्ता है दयानन्द की इस परिभाषा की ।

मानवता का दूसरा नाम है,दूसरों के प्रति हम कितने संवेदनशील हैं? क्या हम वास्तव में ऐसे मर्द हैं जो किसी का दर्द लेकर हमदर्द बन सकें ?

दर्द दूसरों को बाँटे शैतान वही है ।
दर्द दूसरों का बाँटे इंसान वही है ।।

हमारा अपना शरीर हमें परोपकारमयी मानवता का पाठ पढ़ाने वाला सर्वोत्तम शिक्षक है, शरीर के किसी भी अंग में कोई आघात लगता है तो कष्ट का अनुभव सारा शरीर करता है। पेट में स्वयं कोई विकार न भी हो, किन्तु यदि किसी अन्य अंग में विकार हो तो वह भी अपनी संवेदनशीलता इस रूप में व्यक्त करता है, यह अनुभूत बात है। और शरीर के प्रत्येक अंग की विशेषता यह है कि जो भी उसका ग्राह्य है वह औरों के लिए त्याज्य नहीं है, वरन पौष्टिकता के रूप में वह सभी का भाग बन जाता है। इससे बड़ा समाजवाद और मानवता का पाठ आदमी और कहाँ पढ़ेगा?

भ्रातृप्रेम का अनूठा उदाहरण हमें देखने को मिलता है – एक भाई दूसरे भाई के लिए जान देने के लिए तैयार है। गेंद की तरह गद्दी को ठोकर मारने वाले भाई आज कहाँ है?

जब मेघनाद के बाण से लक्ष्मण मूर्छित हो गए तब राम मिलाप करते हुए कहते हैं –

देशे-देशे कलत्राणि देशे-देशे च बान्धवाः।
तं तु देशं न पश्यामि यत्र भ्राता सहोदरः ।।

देश में जगह-जगह मित्र, बन्धु, बान्धव मिल सकते हैं परन्तु मुझे कोई ऐसी जगह दिखाई नहीं देती, जहाँ छोटा भाई मिल जाए। जब लक्ष्मण को होश आया तो लक्ष्मण से पूछा गया लक्ष्मण तुम्हें कितनी चोट लगी?

लक्ष्मण ने कहा कि मैं तो केवल बाण के घाव को ही जानता हूँ, चोट तो राम के हृदय में हुई है। मैं तो केवल मूर्छित हुआ हूँ, वेदना कितनी हुई है यह राम से पूछो। कितना अगाध स्नेह है। मानवता, भ्रातृप्रेम का ऐसा दिव्य उदाहरण और कहाँ मिलेगा? **क्रमशः**

वैदिक संस्कार और बच्चे

बिसनुदेव बिसेसर

देव दयानन्द तथा अन्य विद्वानों के समान अनेक हितैषी प्रकांड विद्वान् कई वर्षों से रेडियो, टी.वी. पर प्रवचन दे दे कर थक गये हैं। हर रविवार को वैदिक वाणी, दिवस में भी समझाते आ रहे हैं। लेकिन आज के बच्चे दिन-दुगुनी, रात-चौगुनी बिगड़ते जा रहे हैं। हम आर्य हैं हम इस देश और विश्व में श्रेष्ठ हैं।

ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका की द्वितीय कथा में स्वामी जी लिखते हैं कि सन्तानों को सुशिक्षा देना और उनके पालन में अत्यन्त प्रीति करना इसका नाम ही गयाश्राद्ध है। कोई विशेष पूजा पाठ या यज्ञ करना अनिवार्य नहीं है। यही खास कारण है कि हम अपने बच्चों को सही शिक्षा नहीं दे पाते हैं। वे केवल ढोंग में जी रहे हैं।

स्वामी दयानन्द ने हमारे बच्चों के भविष्य के लिए सही हाईवे (Highway) बना दिया है केवल हमें उस रास्ते पर चलकर अपनी मंज़िल को पाना है।

बच्चे हमारा भविष्य हैं। वे वंश बढ़ाने वाले हैं, माता-पिता का मान बढ़ाने वाले हैं, नाम रोशन करने वाले होते हैं। आर्य समाजी भाई-बहनों के घरों में सत्यार्थप्रकाश की तरह संस्कार विधि भी होगी। जिसमें यह दर्शाया गया है कि बीज बोने से पहले क्या सेवन करना है। लड़का या लड़की की चाह है। जन्म से पूर्व और जन्म के बाद क्या संस्कार करना है। कैसे शहद में सोने की कलम से बच्चे की जीभ पर ओ३म् लिखना चाहिए और कानों में गायत्री मन्त्र उच्चारित करना चाहिए।

आज विवाह के बाद चौथाड़ी खान-पान फिर, बच्चे पैदा होने पर फिर खान-पान तो आप ही सोचिए क्या संस्कार पड़ेगा। यह एक संस्कार है जैसे किसी पर्व में जाने से बच्चे तंबाकू फूँकने लगता है, कहते हैं -- यह भगवान का प्रसाद है, दूसरे पर्व में भंग और शराब चखते हैं, तीसरे पर्व में जुआ खेलते हैं। यह एक दूसरा संस्कार है। ऐसे कई युवक हैं जो यह संस्कार पाकर पूर्ण रूप से बरबाद हो गये हैं, आज धर्म बदल-बदल कर पागल-खाने में पड़े हैं।

हमारे लड़के-लड़कियाँ ट्यूशन के पीछे हिन्दी नाम से कतराते हैं, नफ़रत करते हैं। कुछ दिनों तक बैठकाओं में पढ़ने आते हैं कालिज जाने लगते हैं। हिन्दी बंद, दूसरी भाषा सीखने लगती हैं। तो क्या वो अपने धर्म, संस्कृति, गीता-रामायण, वेद-पुराण पढ़ पाएँगे। मैं कई ऐसे बच्चों को जानता हूँ जन्मदिन पार्टी में दोस्तों के साथ पिकनिक जाते हैं। दिन-रात मोबाइल कान से लगाए रहते हैं। तो फिर क्या होता है। आप खुद समझ लें।

आज माता-पिता, दादा-दादी को मुँह छुपाना पड़ रहा है। गली-गली में शोर हैं। गैर धर्मी के लड़के लोग लाल कलाई वे रक्षा-सूत्र बाँधकर हमारे बच्चों को मोबाईल देकर ठगते जा रहे हैं। और बाद में आत्महत्या करनी पड़ती है ।

इसी विषय को ध्यान में रखकर भारत में एक अभियान चल रहा है - 'बेटी बचाव'। हमारी बेटियों को कौन बचाएगा केवल पढ़ाने-लिखाने, मोबाईल देने से, विश्वविद्यालय भेजने से, बच नहीं सकती हैं। उन्हें वैदिक संस्कार देना अनिवार्य है। चाहे बेटी कितनी भी सुन्दर क्यों न हो, उसे वेद पढ़ाना चाहिए । आप ज़रा आँखें खोलकर देखें हमारे पढ़े-लिखे ऊँचे औधे पर काम करने वाली। अति खूब सूरत बेटी गैर धर्म में चली जाती है।

मेरे प्यारे माता-पिता, बेटी बहना, बेटे भाइयो वैदिक संस्कार बचपन से अपनाओ, भौतिक शिक्षा के साथ हिन्दी, धार्मिक शिक्षा से जुड़ो। ट्यूशन में साथ ले जाओ, साथ लावो। अकेले बर्थडे या पिकनिक पर मत जाने दो। उसे किसी की तरह यज्ञ-हवन, प्रवचन में ले जाओ। सुबह-शाम वैदिक संध्या करवाओ। भोजन के समय उनसे बातें करो। किसी प्रकार का उदाहरण दो।

हम आर्य समाजी हैं, वेद के सिद्धान्त, वैदिक धर्म के मानने वाले हैं। हम साधारण हिन्दू नहीं हैं हम ब्राह्मण हैं पढ़े-लिखे आर्य पुत्र, आर्य पुत्री है। हमारा उद्देश्य अलग है। हम श्रेष्ठ हैं हमारा उद्देश्य है वैदिक धर्माचरण, बच्चों का भविष्य संवारना, वैदिक संस्कार तथा दिनचर्या अपनाना, विद्या, सही मार्ग को अनुसरण करना।

Om ! Udvayam tamassaspari svaha pashyanta uttaram. Devamdevatrā suryamaganma jyotiruttamam.

cont. from pg 1

Ce verset, en provenance de trois Védas, répond à cette question tout simplement et définit Dieu en bref comme "Une Lumière Spirituelle Transcendante et Resplendissante dans toute sa splendeur car Dieu n'a ni forme, ni trait distincte. Il est incorporel, immuable, impérissable, tout-puissant et intrépide. Il existe depuis la nuit des temps. Il est la source de toute lumière qu'il transmet à tous les corps célestes de l'univers et les illumine. Etant tout-puissant il accorde la force et l'énergie à tous les éléments de la nature pour leur bon fonctionnement.

Par-dessus tout, il est miséricordieux, magnanime, juste, saint, omniscient, la béatitude parfaite, tout-pénétrant, incomparable, omniprésent, plus rapide que l'éclair ou la pensée (l'esprit). Il est la cause de la création et de la dissolution de l'univers, c'est-à-dire, Il personnifie la manifestation de l'univers.

N'oublions pas les autres attributs du Seigneur. Il est le détenteur de toute la connaissance (Le savoir) et de toute la richesse matérielle et spirituelle, et il les confère très généreusement et sans distinction aucune à toutes les créatures pour leur bien-être et leur sécurité.

Il est de loin supérieur à tous. Il excelle dans tous les domaines. En d'autres mots, Il brille dans tous les champs d'activités de l'univers. Il représente la perfection par excellence, et sa définition dans les Vedas est pleinement justifiée.

Introduction

Ce verset (mantra) qui est inclut dans les trois Védas, ci-dessus mentionnés, forme aussi partie de notre prière quotidienne du matin et du soir (Sandhya) et se trouve dans la section intitulée 'Upasthāna Mantra'.

C'est le point culminant de notre prière où nous sommes tous en quête de notre salut (Moksha). Ce but, précis et ultime de notre vie, ne peut être atteint que par la pratique de la vérité et par une culture de dévotion (yoga), selon les enseignements des Védas.

Interprétation / Anushilan

Puissions-nous en toute piété nous élever au-delà des ténèbres de l'ignorance, apercevoir et réaliser. Dieu au fond de notre cœur par la méditation.

Puissions-nous parvenir à entrer en communion parfaite avec le Créateur qui est au delà de l'obscurité, des ténèbres de l'ignorance et des péchés.

C'est lui qui est la source de toute lumière éblouissante, voire resplendissante, de l'univers.

C'est lui, qui est miséricordieux, toute joie et toute félicité (Moksha ké pradātā). C'est par sa grâce que nous sommes libérés de toute souffrance et du chagrin profond.

C'est lui, l'Etre le plus subtil de l'univers, qui survit la fin du monde (la dissolution de l'univers)!

C'est lui, L'Etre Suprême – le sauveur de l'humanité, qui accorde la béatitude (Moksha) aux fidèles !

C'est lui notre Dieu unique qui gère toutes les forces de la nature !

C'est lui qui transmet la lumière à tous les corps célestes (les soleils, les étoiles, les planètes, les lunes, les comètes, l'espace, etc.) et les illumine.

Il est de tout temps le plus grand sage et l'Etre le plus noble qui est Omniprésent et L'âme Suprême de l'univers.

C'est lui qui incarne cette excellente lumière resplendissante qui se manifeste dans tout l'univers et l'éclaire.

Maharishi Dayānand Nirvān Divas & Deepāvali 2015

National celebrations by Arya Sabha Mauritius & the Port Louis Arya Zilā Parishad

Members and well-wishers were convened at the Arya Bhavan, Port Louis in the afternoon of Sunday 08 November 2015 to mark the event which started by Yajna performed by the purohits of the Sabhā. Pandit Roopun and members of his family were the yajmans for the occasion.

In his welcome address Shri Bholanath (Vidhata) Jeewuth emphasised on the need for one and all to rise above the mundane celebrations of festivals. Deepāvali, he added, should not be limited to the lighting of lamps but also be time to seek moral, mental and spiritual enlightenment by dispelling *avidyā* (ignorance.) He appealed to the audience not to be content with sharing of sweets and gifts with neighbours, friends and relatives but also to spend quality time with familiar people and more importantly to share sweets and gifts with the needy and lend moral support to them. That would be a first step to increase our balance of *nishkāma* sevā (selfless service.) He urged one and all (the audience at the Sabhā as well as television viewers) to seize of this opportunity to pay true homage to the founder of the Arya Samāj by living up to the ideals of *Vasudaiva Kutumbakam*, i.e. the world as but one family, live in peace, justice and liberty as well as contribute towards a better and prosperous country.

Pandit Virjanand Oomah, Chairperson of the Purohit Mandal of the Sabhā, called upon all to see festivals as a time to embark on an inner voyage. Through introspection we would empower ourselves to be noble persons and role models. Our character, deeds and innate moral fibre *(guna, karma & swabhāva)* would inspire our family and society at large to live up to the prayers *"tamaso mā jyotirgamaya"*, i.e. be enlightened citizens at the physical, moral /spiritual and social levels.

Shri Balchan Tanakoor, Chairperson of the Ved Prachār Samiti, spoke on the need to spread the message of love, compassion, unity and solidarity among all. He spelt out the need to be aware of the fact that outer lights dispel only the outer darkness whereas the inner light dispels inner obscurity and enliven the mood of people towards positivity; to shift from consumerism (consuming only for the sake of consumption) to moderation; to reform ourselves first and then show the path to others; to be ever ready to shun untruth and adopt virtue; the sum would equate to dispelling all types of darkness in our day-to-day life.

Smt. Dhanwantee Ramchurn, Vice President of the Sabhā highlighted the importance of values in life to be at peace with the self, the family, the society, the country and the whole world. She underlined on the fact that a lamp serves to illuminate the path of many and likewise we should be guides to enlighten others. She recalled the special contribution of Maharishi Dayānand Saraswati, whose Nirvān we are celebrating, to the uplift of the physical, moral / spiritual and social standards of women in the orthodox society of his times, as a result of which our sisters now command respect as leaders at various posts worldwide.

In her address the Chief Guest, Mrs Santi Bai (Maya) Hanoomanjee, Speaker of the National Assembly paid tribute to the Arya Samāj for the social reforms which has marked the history of Mauritius. Baitkās opened the gateway of education to all, especially women. Values based education forged the personality of various eminent persons. The work at grass-root level empowered people to grow spiritually, practice-what-they-preach, of which there is a dire need today. Maharishi Dayānand was a great visionary who walked-the-talk and stood for the continuous betterment of society. She urged the audience to understand the meaning of prayers and live up through tangible actions. Cleaning of houses on the occasion of Deepāvali is a small part of this festival, the larger part is nourishment of the soul. She thanked the Sabhā for the invitation and hearty welcome extended to her.

Dr. Oudaye Narain Gangoo, President of the Sabha, delivered an inspiring speech whereby he stated that those who live up to the edicts of the prayer *"Asato mā sad gamaya, tamaso mā jyotirgamaya, mrityurmāmritam gamaya'* (O Lord! Lead us from untruth to truth, from darkness to light and from death to immortality) enjoy Deepāvali not only on the occasion of the festival but enlighten their lives every day. Such a forceful prayer should not be kept in hibernation to be said on a particular day, but rather to benefit from it at all times. It is also time for us to identify ourselves as souls, be aware of the real qualities of GOD as the All-powerful, Omnipresent (present everywhere and at all times), Omniscient (aware of all our deeds - at the level of thoughts, speech and actions), etc. Nirvān is the liberation of the soul from suffering, from the cycle of birth and death. Deepāvali is also time to promote unity and harmony across society. We should be grateful to the Almighty and to the Rishis (seers of yore) who as torchbearers have cleared the way and rendered our spiritual journey simple. He expressed his wish to see us all move away from darkness and shift to both physical and spiritual enlightenment.

Shri Satyadev Peerthum, Vice President of the Sabhā, moved for the vote of thanks to the Chief guest for her attendance and inspiring message, to the other guests on the podium, to the office bearers and staff of the Sabhā for the laudable work to make this event a success, to the Port Louis Arya Zila Parishad, to the MBC for the live telecast, to all the TV viewers, the audience present at the Arya Bhavan, to the Bhajan mandalis and to the editorial team of Aryodaye for their dedication to bring the special issue in time.

The programme was enlivened by bhajans sung by Shri Vishal Mungroo and Shri Himesh & group.

The Master of Ceremony, Shri Harrydev Ramdhony, Secretary of the Sabhā had ably conducted the programme with coherent commentaries.

Yogi Bramdeo Mokoonlall,
Darshanāchārya

ARYODAYE
Arya Sabha Mauritius
1,Maharshi Dayanand St., Port Louis,
Tel : 212-2730, 208-7504, Fax : 210-3778,
Email : aryamu@intnet.mu,
www.aryasabhamauritius.mu
प्रधान सम्पादक : डॉ० उदय नारायण गंगू,
पी.एच.डी., ओ.एस.के., आर्य रत्न
सह सम्पादक : श्री सत्यदेव प्रीतम,
बी.ए.,ओ.एस.के,सी.एस.के.,आर्य रत्न
सम्पादक मण्डल :
(१) डॉ० जयचन्द लालबिहारी, *पी.एच.डी*
(२) श्री बालचन्द तानाकूर, *पी.एम.एस.एम, आर्य रत्न*
(३) श्री नरेन्द्र घूरा, *पी.एम.एस.एम*
(४) योगी ब्रह्मदेव मुकुन्दलाल, *दर्शनाचाय*
Printer : BAHADOOR PRINTING CO. LTD
Ave. St. vincent de Paul, Les Pailles,
Tel : 208-1317, Fax : 212-9038

TEACHER'S DAY CELEBRATION DAV COLLEGE MORC ST ANDRE

The Staff Welfare Fund Committee of the above college in collaboration with the School Management Team celebrated the Teacher's Day on Friday 9th October 2015. Teachers Day is celebrated worldwide on the 5th of October and the Theme for this year was "Empowering teachers, building sustainable societies".

The function consisted of a cultural programme and a lunch. The main objective of the celebrations was to pay tribute to educators for all the services rendered to society and to provide a platform for members of staff to meet, share ideas and views in connection with the teaching and learning process.

In his address, the Manager focused on the good job being done by the Teaching and Non-Teaching staff and he motivated them to keep the spirit very high. He also pointed out the different facilities put at their disposal and he encouraged them to participate fully in the activities organized by the Staff Welfare Fund Committee to consolidate the Team Spirit and bring about strategies, ways and means to make the school based educational system more dynamic and efficient. The Rector talked about the attributes of good teachers and he opined that teachers are not only role models for the students but for the whole society. He also talked about the new challenges facing the teaching profession and asked teachers to adapt themselves accordingly. The Deputy Rector said that she considered teaching to be a noble profession and that a teacher is one who equipped students with the physical, spiritual, intellectual and social dexterities. She appealed to all educators to inculcate human values in students so that the latter become not only educated persons but also responsible members of society. She thanked all stakeholders who contributed to organize the event and make it memorable.

The programme was perfumed by songs, slam and offering of birthday gifts to members of staff. The Staff Welfare Fund Committee organised a Domino Tournament for the staff and the winning team (Mrs Bhim/ Mr Bisoondoyal) and the runner-up team (Mr Hanumanthadu/ Mr Joggessur) were rewarded during the ceremony.

Miss Panchoo B.W., Secretary

BOOKS

Lutchmee Jaypaul

Today books occupy an important place in the lives of bookworms and bibliophiles. A wealth of facilities is available today such as e-book, loaning of books from libraries, comic books, suspense books, fiction books and novels. As we say "A good book is the best of friends." The pleasure we derive from books is marvelous.

Book readers read books in buses, book houses, libraries and rooms. Holding a book is so wonderful that we want to finish it at one go. "Books are legacies that genius leaves to mankind."

Reading books make us smarter and build our fundamental skills. It expands our horizons and gives a glimpse of other cultures and places. It also improves our concentration and memory. It is a self-esteem builder. Books boost our mental power and save us from Alzheimer. It is a portable tool. By exposing to new books and information we become creative. It broadens our knowledge and improves our reasoning power. It is a money saver instrument and it is a source of information. It is a stress buster. It changes our viewpoint of life.

In order to become a successful person or a top-notch student we need to enrich ourselves with adequate knowledge. "Reading is the window of the world." Magazines like Reader's Digest, Wisdom, Forbes, provide us with information. Reading keeps us abreast of the latest developments in the world. Loneliness is no trouble for a reader.

Reading good books elevates and develops our character. One who wants to be respected in a cultured society must keep himself well-informed. Books constitute a storehouse of pleasure.

Reading books broadens our language proficiency and skills. Regular reading do wonders and it should become a habit. Books are good gifts and souvenirs. According to Montagu "No entertainment is so cheap as reading, or any pleasure so lasting." A person who reads will be successful in life.

ARYA SABHA MAURITIUS

Books available at Arya Sabha Mauritius

cont. from last issue

51. Panchmahayagya Vidhi
52. Shrimad Dayanand Prakash
53. Arya Prava Paddhati
54. Bhashya Vigyan -Bholanath Tiwari-hindi)
55. Kavya Shastra(hindi)
56. Naye Yug ki lor arya samaj(hindi)
57. Varnocharan Shiksha
58. Vedon ke Rajniti siddhant 1,2,3 vol
59. Satyartha Prakash (abridge) version
60. Om the Symbol of God
61. Vedic Vision
62. Children Quest(Basic spiritual guide for modern children
63. Quest the vedic answer for adult
64. Upanishad Prakash
65. Ekadashopnishad
66. Saral Sanskrit Balbodh
67. Saral Sanskrit shiksha part 1
68. Saral Sanskrit shikshaak part 2
69. Saral Sanskrit shikkshak part 3
70. Saral Sanskrit shikkshak part 4
71. Saral Sanskrit shikkshak part 5 (english)
72. Saral Sanskrit shikkshak kovida Part 6,7,8
73. Sanskrit Samanya Gyanam two vols
74. Mahabharat English
75. Gayatri Rahasya (English)
76. Shrimadbhagwad gita by sayavrat
77. Upanishad by Dr Satyavrat
78. Arya samaj-Lala Lajpatraj
79. Vedic Vivah Vidhi in Mauritius
80. Samarpan
81. Vedic Sandhya evam agnihotra
82. Indradhanush - Dayanand Lal Basant Rai
83. Ek Prerak Vyaktitva - Mrs Ramchurn
84. Bharat Bharti

to be continued.....